



सत्यमेव जयते



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



वार्षिक हिंदी पत्रिका
प्रतिभा
संयुक्त अंक -3
वर्ष – 2023

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) आंध्र प्रदेश और प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) आंध्र प्रदेश का कार्यालय विजयावाडा-520002

प्रतिभा पत्रिका परिवार

श्री चंद्र मौलि सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)

मुख्य संरक्षक

सुश्री इंदु अग्रवाल, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संरक्षक

श्री गौतम अल्लाडा

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) / लेखापरीक्षा

श्री किशोर रेड्डी पोलु, उपमहालेखाकार (प्रशासन)

प्रधान संपादक

श्रीमती एल.आर. सत्या, वरि. लेखा अधिकारी (प्रशा.)

सलाहकार संपादक

श्री फूल सिंह, हिंदी अधिकारी

संपादक

सुश्री अपूर्वा सिंह

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

टंकण सहयोग

सुश्री प्रियंका

डी.ई.ओ.

अनुक्रमणिका
माननीय गृहमंत्री का संदेश
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का संदेश
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का संदेश
वरिष्ठ उपमहालेखाकार(प्रशासन)/लेखा परीक्षा का संदेश
प्रधान संपादक का संदेश
संपादकीय
पाठकों की प्रतिक्रिया

क्र.सं.	लेख/कहानी	रचनाकार का नाम (श्री/सुश्री)	पृष्ठ सं.
1	माँ की ममता	श्याम किशोर सिंह, स.ले.प.अ.	12
2	खुशियों की चाबी	फूल सिंह, हिंदी अधिकारी	13
3	शोले फिल्म से प्रबंधन सीख	पी. मुरली कृष्णा, वरि. लेखा अधिकारी	16
4	मेरी परछाई	कृष्णा अग्रवाल पत्नी श्री नीरज मित्तल, लेखा परीक्षक	19
5	संघर्ष	अमित मलिक, लिपिक	22
6	किसान – मालिक या नौकर	सौरभ तोमर, लेखाकार	23
7	आजादी का अमृत महोत्सव	अरुण विश्वास, सहायक पर्यवेक्षक	25
8	आत्मनिर्भर भारत – एक मिशन	श्याम किशोर सिंह, स.ले.प.अ.	27

कविताएँ

9	ए.जी.ऑफिस	देबनाथ मिश्रा, वरि. लेखापरीक्षक	33
10	बचपन के दिन	के आशीष, सहायक लेखा अधिकारी	38
11	कसक	अपूर्वा सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	39
12	यूँ ऐसे ही	शशांक सिंह, डी.ई.ओ.	40
13	सफर	चंद्र पाल वर्मा, डी.ई.ओ.	41
14	उड़ान	चंद्र पाल वर्मा, डी.ई.ओ.	43
15	कुछ ख़्वाब	शशांक सिंह, डी.ई.ओ.	44
16	अनोखी दावत	नीरज मित्तल, लेखा परीक्षक	45
17	मेरे मन में उमड़ता प्यार	शुभम दीक्षित, वरि. लेखापरीक्षक	47
18	नज़र का टीका	प्रियंका, डी.ई.ओ.	49
19	सीख ले	अखिल खरब, वरि. लेखापरीक्षक	50
20	देश से प्यार करो भाई	आर. रामाकृष्णा, स.ले.प.अ.	51
21	मिलन और जुदाई	श्याम किशोर सिंह, स.ले.प.अ.	52
22	हैप्पी बर्थडे	जितेंद्र नाथ शर्मा, वरि. उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा)	53
23	हिसाब	जितेंद्र नाथ शर्मा, वरि. उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा)	54

मुख पृष्ठ : बुद्ध धर्म चक्र, विजयवाडा

पिछला पृष्ठ : उन्दावल्ली की गुफाएं, विजयवाडा

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम 'हिंदी' है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **‘देसिल बयना सब जन मिट्टा’** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **‘कंठस्थ’** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न **‘विश्व हिंदी सम्मेलन’** में **‘न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन’** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

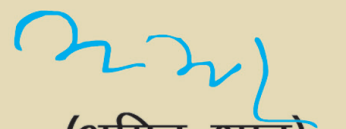
राजभाषा विभाग की एक नई पहल **‘हिंदी शब्द सिंधु’** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **‘लीला हिंदी प्रवाह’** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई-मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023


(अमित शाह)

संदेश



श्री चंद्र मौलि सिंह

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)

कार्यालय की हिंदी पत्रिका “प्रतिभा” के तृतीय अंक के प्रकाशन अवसर पर मुझे अत्यंत हर्ष एवं संतोष की अनुभूति हो रही है। इसके लिए संपादक मंडल सहित सभी रचनाकारों को मैं हृदय से बधाई देता हूँ। विभागीय पत्रिकाएं न केवल राजभाषा कार्यान्वयन को प्रतिबिंबित करती हैं, बल्कि अधिकारियों/कर्मचारियों की लेखन कौशल एवं वैचारिक अभिव्यक्ति को भी मंच प्रदान करने का अवसर प्रदान करती हैं।

पुनः मैं “प्रतिभा” पत्रिका के सभी पाठकों, रचनाकारों एवं संपादक मंडल को शुभकामनाएं देता हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए कामना करता हूँ।

चंद्र मौलि सिंह

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)

संदेश



सुश्री इंदु अग्रवाल

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका “प्रतिभा” के तृतीय अंक का प्रकाशन करने पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका कार्यालयीन गतिविधियों के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी में रचनात्मक लेखन कौशल एवं अभिव्यक्ति को सशक्त मंच प्रदान करती है।

मैं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल और अन्य सभी अधिकारियों को हृदय से बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि सभी कर्मचारी राजभाषा हिंदी के प्रति अपने उत्तरदायित्व को भली भाँति निभाने के लिए सदैव प्रयासरत रहेंगे।

इंदु अग्रवाल

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संदेश



श्री गौतम अल्लाडा

वरि. उपमहालेखाकार(प्रशासन)/लेखापरीक्षा

यह हर्ष का विषय है कि लेखापरीक्षा और लेखा एवं हकदारी कार्यालयों की संयुक्त हिंदी पत्रिका “प्रतिभा” के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल और अन्य सभी अधिकारियों को बधाई देता हूँ। यह पत्रिका कार्यालय की गतिविधियों के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी में रचनात्मक लेखन कौशल एवं अभिव्यक्ति को सशक्त मंच प्रदान करती है।

मैं आशा करता हूँ कि सभी अधिकारी/कर्मचारी अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकतम प्रयोग सुनिश्चित करने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएं।

अ. गौतम

गौतम अल्लाडा

वरि. उपमहालेखाकार(प्रशासन)/लेखापरीक्षा

प्रधान संपादक की कलम से

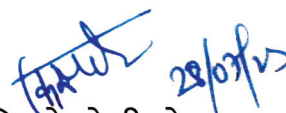


श्री किशोर रेड्डी पोलु

उपमहालेखाकार (प्रशासन)/लेखा एवं हकदारी

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका “प्रतिभा” के तृतीय अंक के प्रकाशन अवसर पर मुझे बहुत खुशी हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन की दिशा में एक सार्थक प्रयास है एवं कार्यालयीन गतिविधियों के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों के रचनात्मक लेखन एवं अपने विचारों की अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने का सशक्त माध्यम है।

पत्रिका के प्रकाशन कार्य से जुड़े संपादक मंडल और अन्य सभी अधिकारियों को मैं बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारी अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकतम प्रयोग सुनिश्चित करेंगे।


किशोर रेड्डी पोलु

उपमहालेखाकार (प्रशासन)/लेखा एवं हकदारी

संपादकीय



श्री फूल सिंह
हिंदी अधिकारी

लेखापरीक्षा और लेखा एवं हकदारी कार्यालयों की संयुक्त हिंदी पत्रिका “प्रतिभा” का तृतीय अंक प्रकाशित करने पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम, मैं कार्यालय के उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन हेतु रचनाएं उपलब्ध करवाकर इस कार्य को सफल बनाने में सहयोग दिया। मैं उन सभी पाठकों का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने पत्रिका के द्वितीय अंक के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया देकर इस अंक को और अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायता की है।

कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाएं राजभाषा के कार्यान्वयन और प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। राजभाषा हिंदी के लिए कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों में सकारात्मक वातावरण तैयार करने में प्रतिभा पत्रिका के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। अहिंदी भाषी क्षेत्र होने के बावजूद कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह प्रशंसनीय है। पत्रिका के माध्यम से ही अपनी रचनाओं के द्वारा हमें एक दूसरे की भावनाओं का पता चलता है। हम सभी राजभाषा प्रेमियों का यह दायित्व बनता है कि राजभाषा को प्रोत्साहित कर दैनिक शासकीय कार्यों में व्यवहारिक रूप से राजभाषा का अधिकतम प्रयोग सुनिश्चित करें।

मैं कार्यालय के उन सभी कार्मिकों का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन कार्य में अपना हर तरह से सहयोग दिया। पत्रिका के सुधी पाठकगणों को उनकी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों के लिए अपना धन्यवाद व्यक्त करता हूँ और इस अंक के लिए भी उनके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा एवं स्वागत करता हूँ।

आपका शुभाकांक्षी।

फूल सिंह

फूल सिंह
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग, महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पूर्वोत्तर सीमांत रेल, मालीगाँव, गुवाहाटी

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रतिभा' के दूसरे संयुक्त अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ प्रभावशाली एवं ज्ञानवर्धक हैं। इसमें श्री फूल सिंह की 'विजयवाड़ा एक नजर' में श्री विजय कुमार शुक्ला की 'अगर आप सोचते हैं कि' गीतांजली कुमारी की 'इतिहास की परीक्षा' तथा शशांक सिंह की 'हरा पत्ता' आदि रचनाएँ विशेष रूप से ज्ञानवर्धक व रुचिकर हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक बधाई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'प्रतिभा' के संयुक्तांक के अंक 2 की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। प्रतिभा राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर श्री देवनाथ मिश्रा जी का आलेख 'सकरात्मक- कोरोना का बेहरीन उपचार' श्री फूल सिंह जी का आलेख 'विजयवाड़ा एक नजर' में, श्री विजय कुमार शुक्ला जी का आलेख 'खोट खोजने से बचे' सुश्री गीतांजली कुमारी जी की कविता 'पथ के हमराही' सुश्री प्रियंका जी की कविता 'अभिलाषा' और श्री सौरभ तोमर जी की कविता 'बचपन बिन बचपन' अत्यंत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चय ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अंतर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम हैं।

हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका प्रतिभा के उज्ज्वल भविष्य के लिए आकांक्षा परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

**भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना-800001**

आपके कार्यालय की संयुक्त हिंदी पत्रिका 'प्रतिभा' के दूसरे अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ बधाई एवं धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अमरावती में स्थित ध्यानरत् महात्मा बुद्ध की प्रतिमा तथा आंध्र प्रदेश विधान सभा की तस्वीर लिए अति आकर्षक एवं सुंदर बन पड़ा है। यह अंक साज-सज्जा के हिसाब से भी उत्कृष्ट है।

पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक एवं पठनीय हैं। इस अंक की रचनाओं में 'लॉकडाउन के दिन' 'विजयवाड़ा एक नजर' में 'पथ के हमराही' 'पर्वतों से आगे' 'अभिलाषा' 'जिंदगी' तथा 'खुश रहना' विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं पठनीय हैं।

राजभाषा हिंदी की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने तथा कार्यालय के सृजनशील कर्मियों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने में 'प्रतिभा' का अमूल्य योगदान है। पत्रिका का भविष्य उज्ज्वल हो, इसी कामना सहित पुनः बधाई एवं आभार।

हस्ता/-

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

**भारतीय लेखा तथा परीक्षा विभाग कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़-160017**

संदर्भित पत्र के साथ आपकी पत्रिका 'प्रतिभा' का नवीन अंक प्राप्त हुआ। आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें। विभागीय पत्रिकाएं अपने कार्यालय एवं अपने राज्य की संस्कृति और कार्यप्रणाली का उत्तम चित्रण करती हैं। इनके माध्यम से हमें कार्यालय एवं समाज में हो रही घटनाओं का सुंदर चित्रण प्राप्त होता है। आपकी पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं समान रूप से सरल, सहज रोचक एवं ज्ञानवर्धक तो हैं ही इसके अतिरिक्त पत्रिका की साज सज्जा एवं मुद्रण भी अति उत्तम है, जिसके लिए लेखकों एवं संपादक मंडल के सदस्यों को विशेष बधाई।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका 'प्रतिभा' के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगंधा' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी/स.ले.अ.

माँ की ममता

श्याम किशोर सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



गाँव के सरकारी स्कूल में क्लास चल रही थी। शिक्षक छात्रों को दिवाली की छुट्टियों का गृह-कार्य बता रहे थे। तभी शायद किसी शरारती विद्यार्थी के पटाखे से स्कूल के स्टोर रूम में आग लग गयी और वहाँ पड़ा पुराना फ़र्नीचर, दरी और कपड़े आदि जलने लगे। देखते ही देखते आग ने भीषण रूप धारण कर लिया और वहाँ पड़ा सारा सामान भी जलकर स्वाहा हो गया।

सभी विद्यार्थी पास के घरों से, स्कूल के नल, हेडपम्पों से जो भी बर्तन हाथ में आया उसी में पानी भर-भर कर आग बुझाने लगे। आग शांत होने के काफी देर बाद हैडमास्टर जी जायजा लेने के लिए स्टोर रूम में घुसे तो किसी विद्यार्थी की दृष्टि स्टोर रूम की बालकनी(छज्जे)पर जल कर कोयला बने एक पक्षी (कबूतर)की ओर गयी। पक्षी की मुद्रा देख कर स्पष्ट था कि पक्षी ने उड़ कर अपनी जान बचाने का प्रयास तक नहीं किया था और वह स्वेच्छा से या मजबूरी से आग में भस्म हो गया था। सभी को बहुत आश्चर्य हुआ।

एक विद्यार्थी ने जल कर कोयला बने उस पक्षी को धकेला तो उसके नीचे से तीन नवजात चूजे दिखाई दिए जो जीवित थे और चहक रहे थे। उन्हें आग से बचाने के लिए पक्षी ने अपने पंखों के नीचे छिपा लिया और अपनी जान देकर अपने चूजों को बचा लिया था।

एक विद्यार्थी ने शिक्षक से प्रश्न किया - गुरुजी, इस पक्षी को अपने बच्चों से कितना मोह था कि इसने अपनी जान तक की परवाह नहीं की?

गुरुजी ने तनिक विचार कर कहा - नहीं, यह मोह नहीं है अपितु माँ की ममता और उसके प्रेम की पराकाष्ठा है जिसने अपने बच्चों को संकट में छोड़कर जाने नहीं दिया बल्कि, अपने प्राण देकर भी अपने बच्चों को बचा लिया। मोह करने वाला ऐसी विकट स्थिति में अपनी जान बचाता और भाग जाता। प्रेम और मोह में जमीन आसमान का फर्क है। मोह में स्वार्थ निहित होता है और प्रेम में त्याग।

भगवान ने माँ को प्रेम की मूर्ति बनाया है और इस दुनिया में माँ के प्रेम से बढ़कर कुछ भी नहीं है। माँ के उपकारों से हम कभी भी उशृण नहीं हो सकते। इसलिए बच्चो माँ की आँखों में कभी आँसू मत आने देना।

खुशियों की चाबी

फूल सिंह
हिंदी अधिकारी



मैं ड्यूटी करने के पश्चात घर पहुँचा ही था कि मोबाईल की घंटी बज उठी। जैसे ही मैंने फोन उठाया तो देखा कि मेरे दोस्त की पत्नी का फोन आया था। मेरे हैलो बोलते ही सामने से आवाज आई, भैया, आप हमारे घर पर कितने समय में पहुँच सकते हो? मैंने भी पूछ लिया कि ऐसी क्या मजबूरी है कि मुझे इतनी जल्दी आने के लिए बोल रही हैं। उन्होंने फिर यही कहा, भैया आप जितना जल्दी आ सकते हो, हमारे घर पर पहुँचिए। किसी अनहोनी की कल्पना करते हुए मैंने उत्तर दिया कि मुझे आने में लगभग एक घंटा तो लग ही जाएगा। इतना सुनकर भाभी जी ने यह कहते हुए फोन बंद कर दिया कि आप जितना जल्दी हो सके हमारे घर पर आ जाओ।

एक पल की देरी किए बगैर मैंने अपनी मोटरसाईकिल उठाई और अपने दोस्त के घर की ओर चल दिया। रास्ते में अनेक तरह के ख्याल मेरे दिमाग में आ रहे थे। जैसे ही मैं अपने दोस्त के घर पहुँचा तो वहाँ का माहौल देख कर एक पल के लिए मैं स्तब्ध रह गया। मैंने घर में प्रवेश करते ही भाई साहब को आवाज लगाई। भाई साहब अपने कमरे में बैठे थे जो पेशे से एक जज थे। भाभी जी और बच्चे एक अलग कमरे में बैठे थे। फिर मैंने घर के नौकर को चाय बनाने के लिए बोल दिया। मैंने बच्चों से पूछने की कोशिश की कि आखिर घर में क्या चल रहा है लेकिन उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर मैंने उन सभी को साथ में बैठाया और हाल-चाल पूछा। इतनी देर में नौकर चाय बनाकर रख गया। चाय पीने के बाद भाभी एकदम से बोल पड़ी, “देखो भैया, आपके दोस्त मुझसे तालाक लेना चाहते हैं लेकिन मुझे कम से कम ये तो पता चले कि

आखिर हुआ क्या है?" मेरी गलती क्या है? अगर वास्तव में ऐसा हुआ तो मेरा और बच्चों का क्या होगा? हमारा गुजारा कैसे होगा?

मैंने भाई साहब की ओर देखा और पूछा कि घर में ये क्या चल रहा है। भाई साहब जो अभी तक शांत बैठे थे एकदम फूट-फूट कर रोने लगे। वे बोले कि हमारे घर में लड़ाई झगड़े की जड़ केवल और केवल मेरी माँ है। मेरी पत्नी और बच्चे मेरी माँ को साथ में नहीं रखना चाहते हैं। जिस माँ के दम पर मैं आज यहाँ तक पहुँचा हूँ उसे मैं तीन दिन पहले वृद्धाश्रम में छोड़ आया हूँ। इनको नहीं पता कि मेरी माँ ने कितनी मुसीबतें झेलकर मुझे पाला है। छोटी उम्र में ही मेरे पिताजी का देहांत हो गया था। तब से लेकर अब तक मेरी माँ ने ही मुझे पाल-पोस कर बड़ा किया है। मेहनत मजदूरी कर के मुझे पढ़ाया-लिखाया और इस काबिल बनाया कि मैं अपने पैरों पर खड़ा हो सकूँ। अब जबकि मेरी पत्नी और मेरे बच्चे मेरी माँ को साथ में नहीं रख सकते हैं तो मैं भी ये घर छोड़ कर अपनी माँ के पास जा रहा हूँ। मैं ये सारी संपत्ति इन बच्चों के नाम कर दूँगा और अपनी माँ के साथ ही रहूँगा। माँ के बिना मुझे ये घर रास नहीं आएगा। इसलिए मैं अपनी पत्नी से तालाक ले रहा हूँ और मैंने ये तालाक के पेपर हस्ताक्षर कर दिए हैं।

उनकी बातों का सिलसिला चलता रहा और परत दर परत भाई साहब बोलते चले गए। मैं जब बहुत छोटा था तो मेरे पिता की मृत्यु के बाद मेरी माँ ने ही मेहनत मजदूरी करके मुझे पढ़ाया है। मेरी माँ मुझे टयुश्र भी नहीं पढ़ाने देती थी कि बेटा तेरा समय बर्बाद होगा। तुम अपनी पढ़ाई पूरी करो। लोग कहते हैं कि मेरी माँ मुझे कभी भी अकेला नहीं छोड़ती थी। वह जहाँ भी काम पर जाती थी मुझे साथ ले जाती थी। उसकी मेहनत के कारण ही मैं आज यहाँ तक पहुँच पाया हूँ। लेकिन इन को इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। इसलिए मैंने फैसला कर लिया है कि जब हमारी आपस में नहीं बन रही है तो तालाक लेने

में ही फायदा है। सारी स्थिति समझने में मुझे देर नहीं लगी। बातें करते-करते रात के 12.30 बज गए थे। मैंने भाभी जी और बच्चों से पूछा कि इस बारे में आपकी क्या राय है। भाभी जी बोली कि हम माँ के साथ ही रहेंगे। हमसे बहुत बड़ी गलती हो गयी है। हमें अपनी गलती पर बहुत अफसोस है।

स्थिति को समझने में मुझे देर नहीं लगी। उसी समय मैंने ड्राइवर को बुलाया और गाड़ी लेकर चलने को कहा। भाई साहब के साथ भाभी जी और बच्चे भी चलने के लिए तैयार हो गए। रात के करीब 2.30 बजे के आसपास हम वृद्धाश्रम पहुँचे। वृद्धाश्रम के गेट पर तैनात चौकीदार ने इतनी रात में आने का कारण पूछा तो भाई साहब बोले कि मैं तीन दिन पहले अपनी बुढ़ी माँ को इस वृद्धाश्रम में छोड़ कर गया था, मैं उसे वापस लेने आया हूँ। नाम पता बताने के बाद उसने हमें अंदर जाने दिया। इसके बाद वृद्धाश्रम की वार्डन से अनुमति लेनी थी। भाई साहब को देखते ही वह बोली, "क्या हुआ जो इतनी जल्दी आ गए और इतनी रात में"? भाई साहब ने वही बात दोहराई कि मैं अपनी माँ को लेने आया हूँ। इस पर वार्डन बोली कि सभी सबूत आपके सामने होते हुए भी आपने सही निर्णय लेने में देर कर दी, कोर्ट में आप क्या सोच-समझ कर निर्णय लेते होंगे। वार्डन बड़बड़ाती हुई हमें माँ के कमरे तक छोड़ आयी।

जब हम माँ के कमरे में पहुँचे तो वह अपने बिस्तर पर लेटी थी। उसकी आँखों में नींद नहीं थी। वह अपनी बगल में रखी अपने बेटे और पोते-पोती की तस्वीर को निहार रही थी। हमें देखते ही वह आश्चर्यचकित रह गयी। बेटे और पोते-पोती को देखकर उसकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। मैंने बोला, माँ जी अब घर चलो, हम आपको लेने आए हैं। इनसे बहुत बड़ी गलती हो गयी है और अपनी गलती का प्रायश्चित भी हो गया है। आप इन्हें माफ कर दीजिए और अपने घर पर चलिए।

वहाँ से माँ को लेकर करीब दो घंटे के बाद हम घर पहुँच गए। भाई साहब की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। बच्चे भी अपनी दादी से मिलकर बहुत खुश हुए और बोले कि अब हम आपको कहीं भी जाने नहीं देंगे। आपका हर तरह से ख्याल रखेंगे। माँ वास्तव में ही खुशियों की चाबी होती है जिससे घर का हर कोना हर्षित होता है। हम सभी को अपनी माँ का ध्यान रखना चाहिये। उसकी हर खुशी का कारण बनना चाहिये। एक माँ ही तो है जो अपनी संतान के लिए दुनिया की हर मुसीबत को झेल लेती है लेकिन अपनी संतान पर आँच तक नहीं आने देती। माँ ही हमारी जीवनदायनी है। हमें अपनी माँ का सम्मान करना चाहिये। जीवन में हम किसी भी स्थान, पद पर पहुँच जाएं, माँ की कुर्बानी को हमें हमेशा स्मरण रखना चाहिये।

शोले फिल्म से प्रबंधन सीख

पी. मुरली कृष्णा,
वरि. लेखा अधिकारी



“शोले” 1975 में रिलीज ब्लॉकबस्टर फिल्म थी। अभी भी यह भारतीय इतिहास की सबसे महान फिल्म है। जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था तो मैंने यह फिल्म देखी थी। मुझ पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा। एक बालक होने के नाते मैं इसके विभिन्न पहलुओं जैसे संगीत, डॉयलॉग(संवाद) कहानी, पात्र, नायक इत्यादि से बहुत प्रभावित हुआ। इस फिल्म में ब्लॉकबस्टर होने के सभी तत्व हैं। फिल्म के कुछ संवादों ने मुझे बहुत प्रेरित किया। इनमें से कुछ आपके साथ बाँटना चाहता हूँ।

खोटा सिक्का तो दोनों तरफ से खोटा है। सिक्के और इंसान में शायद यही फर्क है। फिल्म जेलर और ठाकुर के संवाद से शुरू होती है। वे दो चोरों जय और वीरू के बारे में बात करते हैं। जेलर कहता है कि दोनों चोर खोटे सिक्के की तरह किसी काम के नहीं हैं। एक खोटा सिक्का दोनों तरफ से खोटा ही होता है। ठाकुर कहता है कि सिक्के और इंसान में यही फर्क है। तब वह उन्हें गिरफ्तार करने की घटना का वर्णन करता है और उन्हें एक मालगाड़ी में लेकर जाता है जिस पर डाकू हमला कर देते हैं। यही दो चोर गुड्स ट्रेन (मालगाड़ी) को बचाने में इंस्पेक्टर की सहायता करते हैं। लोगों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू होते हैं। फिर भी उनसे व्यवहार करते समय हमें उनके सकारात्मक रूप को देखना चाहिए। सकारात्मक गुणों के आधार पर किसी कार्य के लिए उनके औचित्य का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।

तुम कानून तोड़ने के लिए खतरे मोल लेते हो और मैं कानून की हिफाजत के लिए। गुड्स ट्रेन(मालगाड़ी) में इंस्पेक्टर और चोरों के बीच एक संवाद होता है। चोर बताते हैं कि वे पैसा कमाने के लिए चोरी करते हैं इसी प्रकार इंस्पेक्टर भी पैसे कमाने के लिए नौकरी कर रहा है। इंस्पेक्टर मना कर देता है और कहता है कि वह चुनौतियों और बहादुरी के लिए नौकरी करता है। चोर उत्तर देते हैं कि वे बहादुर हैं, जिसके उत्तर में इंस्पेक्टर कहता है कि तुम लोग कानून तोड़ते हो और वह कानून की रक्षा के लिए है। लोग काम करके अपनी आजीविका कमा सकते हैं, लेकिन क्या हमारा कार्य वास्तव में कानून की रक्षा करता है या तोड़ता है, प्रश्न ये है। कोई भी कार्य चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, यदि यह कानून तोड़ता है, यह अवैध है और वह अपराध की श्रेणी में आता है। **हमारी इतनी बदलियों के बाद भी हम नहीं बदले।** एक बात कि हर कर्मचारी तबादले से चिंतित है। लेकिन एक पद से दूसरे पद पर तबादले से हमको कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिये। हमारे अस्तित्व के मूल में हमें अपरिवर्तित रहना चाहिए। जेलर शेखी में अपने

आप को ब्रिटिश शासन के समय का कहता है। उसके मूल्य और व्यवहार को ब्रिटिश लोगों ने बनाया है। अतः एक समृद्ध पृष्ठभूमि से होने के कारण वह बदलना नहीं चाहता। वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदली हो सकता है लेकिन जो बुनियादी मूल्य उसने ब्रिटिश लोगों से सीखे हैं उन्हें नहीं बदल सकता।

अपनी बहादुरी पर अगर इतना ही घमंड है तो एक काम करोगे मेरे लिए। जब जय पहले पुलिस इंस्पेक्टर को देखता है जो अब ठाकुर बलदेव सिंह है, वह तंज करते हुए कहता है कि आपकी बहादुरी को क्या हुआ इसने आपको छोड़ दिया है। ठाकुर मौका देखकर खूंखार डाकू गब्बर सिंह को पकड़ने के लिए जय को चुनौती देता है। आत्म-विश्वास होना बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन हमारा आत्म-विश्वास ऐसा नहीं होना चाहिये जिससे दूसरे लोगों को नीचा देखना पड़े।

कितने आदमी थे जब उसके आदमी ठाकुर के लोगों द्वारा मार दिए जाते हैं, गब्बर यह प्रश्न पूछता है। प्रतियोगिता का साईज पता करना जरूरी है। यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि आप किसका विरोध कर रहे हैं। इससे आपको विश्लेषण करने और अगली कार्रवाई तैयार करने में मदद मिलेगी।

कितना इनाम रखे रे सरकार हम पर! पूरे पचास हजार। गब्बर सिंह को गर्व होता है कि पुलिस ने उसके सिर पर 50000 रूपए का इनाम रखा है। वह ग्रामीणों में भय के कारण इसे प्राप्त करने में सक्षम था। रात में यदि कोई बच्चा रोता था तो माँ उसे चुप रहने के लिए कहती थी, चुप हो जा नहीं तो गब्बर सिंह आ जाएगा। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमारी प्रतिष्ठा बहुत महत्वपूर्ण है। हमें यह पता होना चाहिये कि लोगों के बीच हमारी क्या प्रतिष्ठा है। हमें केवल जानना ही नहीं बल्कि प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए कदम भी उठाने चाहिए।

याद रखूँगा, तुझे याद रखूँगा। जब इंस्पेक्टर गब्बर सिंह को गिरफ्तार करता है तो ये कहता है। निसंदेह वह इंस्पेक्टर से बदला लेकर उसका पीछा करता है। हमारी जिंदगी यादों से भरी है। अधिकतर समय हम उन घटनाओं को याद करते हैं। जहाँ लोग हमारा दिल दुखाते हैं। हमारे अंदर बदले की भावना होनी चाहिये लेकिन हमें इससे उभरना चाहिये। बुरी यादों और बदले की भावना रखने से केवल विनाश ही होगा। जैसे गब्बर सिंह को अंततः दंडित किया गया और गिरफ्तार कर लिया।

ठाकुर न झुक सकता है न टूट सकता है, ठाकुर सिर्फ मर सकता है, मगर जब तक जिऊँगा सर उठाकर जिऊँगा। ठाकुर और उसके आदमियों के विरोध में गब्बर सिंह रामगढ़ में एक जवान लड़के को पकड़ लेता है और मार देता है। वह सभी ग्रामीणों को डराता है कि यदि वे उसके आदमियों को नहीं छोड़ेंगे तो वह रामगढ़ के सभी बच्चों को

मार देगा। अब गाँव वाले मुसीबत में हैं वे न तो उसकी माँग को मान सकते हैं न ही अपने बच्चों को खोना चाहते हैं। उस समय ठाकुर और ग्रामीणों में एक संवाद होता है। ग्रामीण ठाकुर को हिंसा छोड़ने के लिए कहते हैं जिसे वह अस्वीकार कर देता है। ठाकुर कहता है कि किसी को बुरे लोगों के आगे नहीं झुकना चाहिये। तभी एक ग्रामीण कहता है कि यदि तुम नहीं झुके तो तुम टूट जाओगे। तब ठाकुर कहता है कि किसी को भी झुकना और टूटना नहीं चाहिये, बल्कि सर उठाकर जीना चाहिये। इस संसार में सम्मान और इज्जत से जीने के लिए हर किसी को कीमत अदा करनी पड़ती है। जो हमारे इज्जत और सम्मान को ठेस पहुँचाए हमें समझौता नहीं करना चाहिये। हमें हमेशा अपना सर उठाकर जीना सीखना चाहिये। यह सबसे महत्वपूर्ण सीख है जो मैंने इस फिल्म से सीखी है।

प्रकाशम बैराज कृष्णा नदी पर 1223.5 मीटर तक फैला है जो भारत के आंध्र प्रदेश में विजयवाड़ा, एनटीआर और मंगलगिरी ताडेपल्ले नगर निगम, गुंटूर जिलों को जोड़ता है।



मेरी परछाई

कृष्णा अग्रवाल
पत्नी श्री नीरज मित्तल, लेखा परीक्षक



दुर्गा अपने पति राजेश के साथ एक खुशहाल जीवन बिता रही थी। दुर्गा एक अच्छे और सभ्य परिवार से थी। वो अपने पति से बहुत प्यार करती थी और राजेश भी दुर्गा से बहुत प्रेम और स्नेह की भावना रखता था। राजेश एक सरकारी दफ्तर में नौकरी करता था। परंतु जब एक रात राजेश देर रात तक घर नहीं लौटा तो दुर्गा को चिंता होने लगी और उसके मन में अजीबो-अजीब खयाल आने लगे। तभी फ़ोन की घंटी बजी और वह फ़ोन उठाने गई। फ़ोन पर एक लड़की की आवाज़ आई। वो बोली, “आपके जानकार मेरे घर पर हैं। ये मुझे रास्ते में बेहोशी की हालत में मिले तो मैं इन्हें अपने घर ले आई। आप जल्दी से मेरे घर आ जाईए”।

दुर्गा जल्दी ही उस लड़की के घर गई तो उसने अपने पति को बेहोशी की हालत में पाया। उस रात बारिश बहुत तेज हो रही थी। लड़की ने दुर्गा से कहा, “अगर आपको सही लगे तो आप आज रात मेरे घर रुक सकती हैं।” वैसे मैं भी इस घर में अकेली रहती हूँ। दुर्गा ने थोड़ी देर सोच-विचार किया और कहा, ठीक है! हम आज रात तुम्हारे घर पर ही रुक जाते हैं। दुर्गा और वह लड़की बहुत देर तक बातें करती रही। न जाने क्यों ये लड़की दुर्गा को अपनी परछाई सी लगी। दुर्गा ने पूछा, तुम अकेली रहती हो तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं? लड़की ने कहा, मेरे माँ-बाप ने मुझे अनाथ आश्रम में छोड़ दिया था पर आश्रम में रहना मुझे अच्छा नहीं लगता था। एक रात जब आश्रम में सब लोग सो रहे थे तभी मैं मौका देखकर वहाँ से भाग निकली और खुद से वादा किया कि जीवन में अपने दम पर कुछ करना है। ये सब बातें सुन कर दुर्गा की आँखें नम हो गयीं।

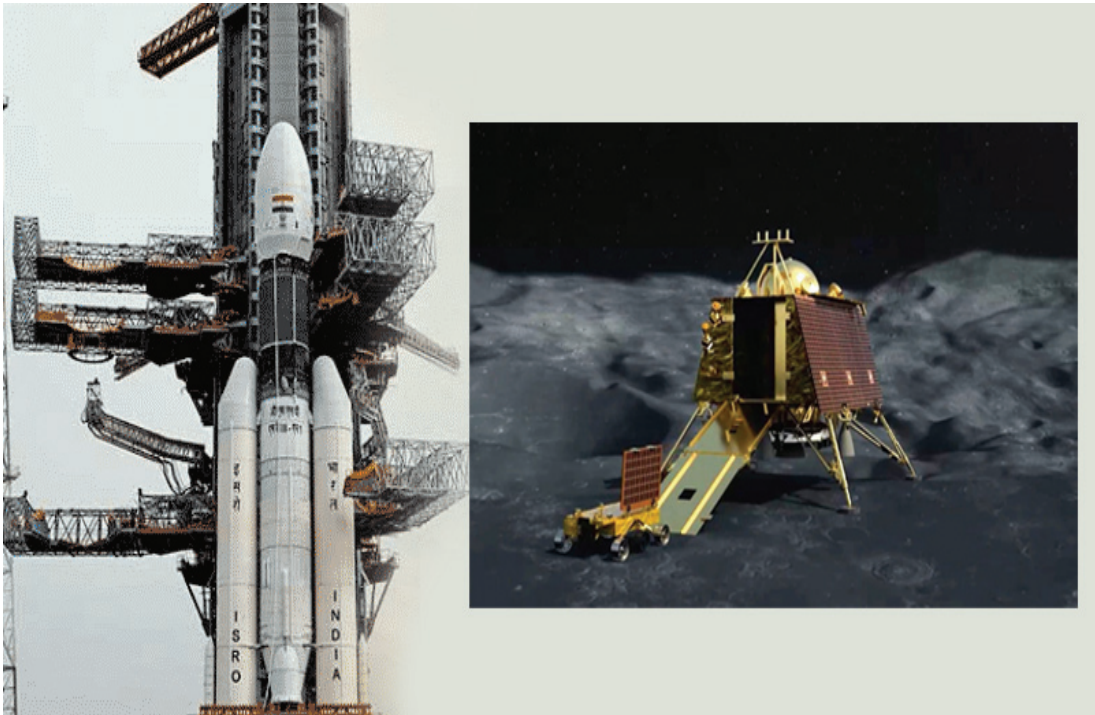
लड़की ने कहा, आप इतनी दुखी न हों क्योंकि भारत देश में आये दिन किसी न किसी लड़की के साथ ये होता ही है। दुर्गा ने नम आँखों से उस लड़की का नाम पूछा तो लड़की ने अपना नाम आरती बताया। ये नाम सुनकर दुर्गा आरती को बहुत देर तक

देखती रही। आरती समझ नहीं पा रही थी कि दुर्गा इतना अजीब व्यवहार क्यों कर रही है? जब आरती से रुका न गया तब आखिर में उसने पूछ लिया कि बात क्या है? दुर्गा ने कहा क्या तुम्हारी उम्र 21 साल है? आरती ने हाँ में सिर हिला दिया पर आरती ने कहा, आपको कैसे पता? दुर्गा ने कहा, मैं तुम्हें सब बताऊंगी पहले तुम मुझे बताओ तुम्हारा नाम आरती किसने रखा? आरती ने जवाब दिया कि जिस वक्त मेरे माँ-बाप ने मुझे छोड़ा उस वक्त मैंने जो फ्रॉक पहन रखा था उस फ्रॉक पर आरती नाम लिखा था, बस तभी से मेरा नाम आरती रख दिया। अब दुर्गा के सामने सारी बात शीशे की तरह साफ थी। दुर्गा आरती से कुछ बोलती इतनी देर में पीछे से जोर से आवाज आई, दुर्गा...! ये आवाज राजेश की थी। दुर्गा बहुत खुश थी पर आँखों में पानी भी था। वो भाग कर राजेश के गले लग गई। राजेश को लग रहा था कि दुर्गा उसकी हालत को लेकर परेशान है। राजेश ने दुर्गा को दिलासा दिया और कहा मैं ठीक हूँ, तुम परेशान मत हो। राजेश को कहाँ पता था कि कल रात जिस अजनबी लड़की ने उसको सहारा दिया वो लड़की कोई और नहीं बल्कि उसकी खुद की बेटी है जिसको 21 साल पहले उन्होंने अनाथ आश्रम में छोड़ दिया था।

दुर्गा के दिल दिमाग में बस एक ही बात घूम रही थी कि अपनी बेटी को उसके खुद के घर कैसे लेकर जाऊँ। तभी दुर्गा के दिमाग में एक सुझाव आया और उसने आरती से कहा, “हमारी कोई संतान नहीं है और तुम भी इस दुनिया में अकेली हो, तुम हमारे साथ हमारे घर चलो।” राजेश को समझ नहीं आ रहा था कि एक ही रात में एक अजनबी लड़की से दुर्गा को इतना लगाव कैसे हो गया। लेकिन राजेश ये सोच कर खामोश रहा कि दुर्गा पूरा दिन घर पर अकेली रहती है, इस लड़की के आने से उसको सहारा मिल जाएगा। लेकिन आरती कहां राजी होने वाली थी, वो एक अनाथ बच्ची थी। आरती ने कहा, “जब मेरे माँ-बाप ने मेरा त्याग कर दिया तो मैं कैसे यकिन कर लूँ कि आप आप मुझे माँ-बाप का प्यार देंगे। अभी एक रात पहले ही तो हम मिले हैं, ऐसे किसी अजनबी को कैसे माँ-बाप बना लूँ।” दुर्गा ने जवाब दिया बेटी! अगर हम अजनबी होते तो तुम इस तरह खुल कर मुझसे बात नहीं कर पाती। आरती ने माफी माँगते हुए कहा, मुझे आपको ये सब नहीं बताना चाहिये था, मुझे माफ करें, जाने अनजाने में आपको जीवन की कहानी सुनाने लगी। दुर्गा ने कहा, बेटी हमारा मिलना किस्मत में लिखा था तभी हम मिले हैं।

आरती ने कहा, माफ़ करिए, आप क्या कहना चाहती हैं मैं समझ नहीं पा रही? दुर्गा ने आरती को सब कुछ बताया। तुम हमारी ही बेटा हो। आज से सही 21 साल पहले हमने अपनी आरती को अनाथ आश्रम में छोड़ दिया था। राजेश भी सब बातें सुन रहा था। आरती के मन में प्रश्नों का तूफान शुरू हो गया लेकिन दुर्गा ने आरती की आँख में आँख डालकर हर सवाल का जवाब आराम से दिया कि कौन सी परेशानी के चलते राजेश और दुर्गा ने ये फैसला लिया था। आज राजेश दुर्गा के साथ-साथ आरती भी बहुत खुश थी। तीनों खुशी-खुशी अपने घर लौट गए।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), श्रीहरिकोटा, आंध्र प्रदेश में स्थित है। चंद्रयान-1, 2 और चंद्रयान-3 को यहीं से प्रक्षेपित किया गया है।



संघर्ष

अमित मलिक
लिपिक



रोहन एक प्राइवेट कंपनी में काम करता था। उसने रंजना से प्रेम-विवाह किया था। रोहन की माँ इस विवाह के खिलाफ थी। वह रंजना को बिल्कुल भी पसंद नहीं करती थी, इसलिए वह रंजना को आये दिन खरी-खोटी सुनाती। वक्त बीता और रंजना ने एक सुंदर सी बच्ची को जन्म दिया। रंजना और रोहन ने मिलकर बेटी का नाम सोनल रखा। एक दिन रोहन अपनी बाईक से घर जा रहा था तब अचानक ही ट्रक के साथ बाईक टकराने से उसकी मौत हो गयी।

रंजना की तो जैसे दुनिया ही उजड़ गयी थी। बेचारी कब तक सास के ताने सुनती। इस कारण वह घर छोड़ कर अपने भाई के पास जा पहुंची। रंजना अपने भाई के घर रहने लगी लेकिन रंजना की भाभी को रंजना का रहना अच्छा नहीं लगता था। रंजना मजबूर थी वहाँ रहने के लिए क्योंकि उसके मां-बाप नहीं थे। सोनल बड़ी हो रही थी। सोनल की मामी की बेटी निहारिका सोनल की उम्र की थी। दोनों बच्चियाँ साथ-साथ बड़ी हो रही थी। सोनल की मामी सारा काम सोनल से ही करवाती थी और अपनी बेटी निहारिका को आराम करने देती थी। रंजना एक माँ होने के नाते बेटी को काम करते कैसे देख पाती, इसलिए सोनल का काम रंजना कर दिया करती थी।

रंजना भाई के स्नेह के सहारे जीवन बिता रही थी। एक दिन सोनल और निहारिका कॉलेज से लौट रही थी जिसमें निहारिका का एक्सीडेंट हो गया और निहारिका का काफी खून बह गया था। खून की जरूरत पड़ने पर सोनल ने खून दिया और उसके बाद सोनल की मामी ने रंजना और सोनल को दिल से अपना लिया था। सोनल और निहारिका सरकारी नौकरी की तैयारी कर रही थी। सोनल ने कड़ी मेहनत करके परीक्षा पास कर ली और एक बड़ी अधिकारी बन गई। लेकिन सोनल की नौकरी गाँव से बाहर लगी थी। सोनल ने यह बात अपनी माँ को बताई। माँ को छोड़ कर वह कैसे जाती परंतु बेटी के सपने भी कैसे तोड़ देती। रंजना ने अपने भाई से सलाह माँगी तो उन्होंने कहा कि तुमने बहुत तकलीफें सही हैं और अब वक्त है कि तुम अपनी बेटी के सपने पूरे करो। बस फिर क्या था। सोनल ने मामा-मामी से आशीर्वाद लिया और माँ को लेकर नौकरी पर चली गयी।

सीख – संघर्ष करने वालों की कभी हार नहीं होती।

किसान - मालिक या नौकर

सौरभ तोमर
लेखाकार



आज से 40-50 साल पहले सब कुछ ऑर्गेनिक ही था। हर किसान के पास गोबर की खाद थी। यूरिया के लिए शहर जाकर लाईन में नहीं लगना पड़ता था। खुद के खेत का बीज था। अगली फसल के लिए अपने खेत का अच्छी गुणवत्ता का बीज बचाकर रखता था। खेती बाड़ी पूरी तरह आत्मनिर्भर थी।

बाजार में बैठा व्यापारी बोला- आपके पास उन्नत किस्म का बीज नहीं है। यह बेकार है, आपको अच्छी पैदावार नहीं देते। ये बीज की थैली ले जाओ एक बार।

किसान भोला था। महंगी बीज की थैली ले गया। खेत में बुआई कर दी। उन बीजों के साथ किसान के खेत में जहरीली विदेशी खरपतवार भी उग गयी।

खेत में अजनबी घास देखकर किसान फिर व्यापारी के पास गया। व्यापारी बोला- ये दवाई ले जाओ, खेत में छिड़काव करो। मजबूरी में किसान को उस खरपतवार को खत्म करने की जहरीली दवाई चुपचाप खरीदनी पड़ी।

कमजोर बीज से कमजोर पौधे खड़े हुए तो कीट-पतंगे उनसे चिपक गये। किसान को फिर व्यापारी में आशा दिखी। व्यापारी बोला- ये कीटनाशक छिड़को तथा रासायनिक खाद डालो, तभी अच्छी पैदावार मिलेगी।

मरता, क्या न करता। किसान को रासायनिक खाद और कीटनाशक खरीदना पड़ा। अच्छी पैदावार के चक्कर में हर बार दोगुना रासायनिक खाद और कीटनाशक के बिना पैदावार दे ही नहीं सकते थे। हर बार पहले से ज्यादा जहर चाहिए, जैसे एक नशेड़ी को हर आने वाले दिनों में पहले से हाई-डोज चाहिए।

अब किसान व्यापारी यानी कॉरपोरेट के चंगुल में पूरी तरह फँस चुका था, जीनोम सीड खरीदकर। गुलामी हमेशा बीज से शुरू होती है।

धीरे-धीरे किसान की जमीन एक शराबी की तरह हो गयी, आदी बन गयी इस जहर की। किसान भी कर्ज के बोझ तले दबता चला गया। किसान को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसने भी दारू में अपना बचाव का रास्ता तलाशा। अब धरती को भी नशा चाहिए और किसान को भी। दोनों आदी हो चुके नशे के और बणिये की पौ बारह पच्चीस। किसान के खेत बिकने लगे तो किसान स्प्रे/पेस्टिसाइड खुद पीने लगा।

अब धरती बंजर हो गयी। मिट्टी दूषित/जहरीली हो गयी। कीटनाशकों से हवा पानी सब कुछ जहरीला हो गया। वही जहरीला चारा पशुओं के लिए आने लगा, पशुओं को भी टीके लगाने शुरू हो गये।

कॉरपोरेट ने बीज/खाद और कीटनाशक का बड़ा बाजार खड़ा कर लिया। कैंसर जैसी भयानक बीमारियों का जन्म हुआ। ड्रग इंडस्ट्री ने मानव औषधि का भी बड़ा

बाजार खड़ा कर लिया क्योंकि रासायनिक खाद से पैदा हुए अन्न ने मानव शरीर को बीमार बना दिया। रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो गयी। आज हर मानव शरीर अन्न कम खाता है और दवाई ज्यादा। सच कहूँ तो सिर्फ दवाइयों पर जिंदा है।

अब किसान की खेती पूरी तरह से कॉरपोरेट के कब्जे में है। वह जब चाहे देश में अन्न संकट पैदा कर सकता है। किसान पूरी तरह से कॉरपोरेट/ कम्पनियों का गुलाम है उसके पास न तो देशी खाद है और न ही देशी बीज।

अब व्यापारी कह रहा है कि आपने अपनी जमीन को बंजर कर दिया है, जहरीला कर दिया है। आप जैविक खाद खरीदो। वो जैविक खाद जो पहले सिर्फ और सिर्फ किसान के पास था।

उधर बिना रोज की शारीरिक मेहनत किये, कुर्सी पर बैठे व्यापारी के घर में भी कैन्सर घुस गया। शुगर पर तो उनका आनुवंशिक अधिकार पहले से था ही। औरतें बांझ होने लगी और मर्द नपुंसक।

अब बाजार को हर चीज आर्गेनिक चाहिए। बिना रासायनिक खाद और कीटनाशक का गेहूँ, बिना इंजेक्शन की सब्जी, देशी गाय का दूध। दूध ना मिले तो देशी गाय का मूत्र ही ला दो। सेठ/सेठाणी से ये दिल का दौरा कमेरी भोली-भाली किसान कौम के घर में भी आन पड़ा। सेठ तो पहले भी दवाइयों से जीवित था आगे भी रह लेगा, लेकिन हॉस्पिटल के खर्च को किसान सह नहीं पा रहा, मजबूरन फिर उसे, उसी व्यापारी की जहरीली दवाई का सेवन कर इस दुनिया को अलविदा कहना पड़ रहा है। अभी ये सिर्फ शुरूआत है, स्थिति आगे और भयानक होने वाली है। 15-16 साले के बच्चे एक-एक क्विंटल के हो रहे हैं, मात्र अपना शरीर ढो सके वह भी एक उपलब्धि है।

अब सरकार/कृषि वैज्ञानिक कह रहे हैं-पारम्परिक खेती मत करो। बागवानी करो, हर्बल खेती करो, औषधीय पौधे उगाओ, कमर्शियल खेती करो। ऊगा तो लेगा किसान पर यहाँ भी वही व्यापारी का रोल। किसान को मार्केटिंग नहीं आती, अपना प्रोडक्ट सीधा इंडस्ट्री को बेचना नहीं आता। मतलब साफ है मुनाफा वसूली कोई और करेगा, कटना हर हाल में खरबूजे को ही है।

सरकार के पास कृषि क्षेत्र के ना तो कोई दीर्घकालिक योजना है और ना ही विजन क्योंकि जो कृषि विशेषज्ञ बने बैठे हैं उन्होंने कभी खेती का मुँह ही नहीं देखा।

आजादी का अमृत महोत्सव

अरुप विश्वास
सहायक पर्यवेक्षक



आजादी का अमृत महोत्सव हम सभी को मिलकर मनाना है।

जन-जन की भागीदारी से भारत देश का गौरव बढ़ाना है।।

प्रस्तावना:- भारत की आजादी के 75वें वर्ष पर देशभर में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। सोने की चिड़िया कहा जाने वाला हमारा देश भारत करीब 200 वर्षों तक अंग्रेजी हकुमत का गुलाम रहा है। इन गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए अनेक स्वतंत्रता सेनानियों को कड़ा संघर्ष करना पड़ा और 15 अगस्त 1947 के दिन हमारा देश भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हो गया। इतनी मुश्किलों और बलिदानों से मिली हुई आजादी को हम भारतवासी प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त के दिन जश्न के रूप में मनाते हैं। यूँ तो यह जश्न प्रत्येक वर्ष ही महत्वपूर्ण होता है, किंतु इस वर्ष का जश्न कुछ खास है क्योंकि हमारे देश भारत को स्वतंत्र हुए 75 साल हो चुके हैं।

“स्वतंत्रता अधूरी जिनके बिन है, ये उन्हीं शहीदों का दिन है।”

आजादी के अमृत महोत्सव की शुरुआत: भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा इस महोत्सव की शुरुआत गुजरात के साबरमती आश्रम से 12 मार्च 2021 को दांडी यात्रा के आयोजन के रूप में हुई। प्रथम अमृत महोत्सव 15 अगस्त 2021 को मनाया गया। पिछले वर्ष 15 अगस्त 2022 को यह महोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया और इस वर्ष भी 15 अगस्त को यह महोत्सव मनाया जाएगा।

आजादी के अमृत महोत्सव का उद्देश्य:- आजादी के इस महोत्सव का उद्देश्य सम्पूर्ण देश में जन अभियान चलाकर हर एक व्यक्ति को इस अभियान से जोड़ कर उनमें विभिन्न तरीकों से देशभक्ति की भावना को जागृत करना है। इस महोत्सव का उद्देश्य जन भागीदारी के द्वारा लोगों तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और इस संग्राम के हर नायक के बारे में जानकारी का प्रसार करना है। देश के विकास और प्रगति में युवाओं की जागरुकता और रुचि को बढ़ाना है। विविधता में एकता बनाने के लिए प्रयास करना

है। आने वाले 25 साल जिन्हें अमृत काल माना जा रहा है, उसकी रुपरेखा भी इस महोत्सव के दौरान तैयार की जा रही है।

आजादी के अमृत महोत्सव का महत्व- आजादी के बाद हमारा देश लगातार आगे बढ़ रहा है। भारत में युवाओं की संख्या अधिक है जो अपनी काबिलियत से लगातार उन्नति और सफलता के परचम लहरा रही है और देश के विकास में सहयोग दे रही है। आज भारत परमाणु शक्ति के साथ-साथ एक बड़ी शैत्य शक्ति भी है। चाँद और मंगल पर मानवरहित मिश्र भेजने वाले देशों की सूची में भारत का नाम शामिल है। आज भारत को पूरी दुनिया आशा भरी नज़रों से देख रही है। भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा संविधान कहा जाता है।

हर घर तिरंगा अभियान: आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने हर घर तिरंगा अभियान भी चलाया हुआ है। इस राष्ट्रीय महोत्सव के दौरान सभी सरकारी भवनों और घरों पर तिरंगा फहराने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। राष्ट्रीय ध्वज के साथ हमारा संबंध हमेशा व्यक्तिगत से अधिक औपचारिक और संस्थागत रहा है। स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में एक राष्ट्र के रूप में ध्वज को सामूहिक रूप से घर में लाना इस प्रकार न केवल तिरंगे से व्यक्तिगत संबंध का एक कार्य बल्कि राष्ट्र निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक भी बन जाता है। इस पहलू के पीछे का विचार लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाना और भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरुकता बढ़ाना है।

“आओं हर घर तिरंगा फहराएं, मिलकर सभी आजादी का अमृत महोत्सव मनाएं”

उपसंहार:- हमारा देश भारत प्रगति की नयी उंचाईयों को छू रहा है। हम भाग्यशाली हैं जो हमें इस अमृत महोत्सव के माध्यम से स्वतंत्र भारत के ऐतिहासिक काल को देखने और जानने का मौका मिल रहा है। हम सभी भारतवासियों को इस अमृत महोत्सव में भागीदारी सुनिश्चित कर जन सहयोग करना चाहिये

आत्मनिर्भर भारत - एक मिशन

श्याम किशोर सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो कि अपनी एकता व अखंडता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। भारत का इतिहास अपने आप में अनूठा है। हमारा देश प्राचीन समय में सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था किंतु ब्रिटिश सरकार ने इसकी जड़ें खोखली ही नहीं की बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंका था। विभिन्न अथक प्रयासों के उपरान्त हमें 15 अगस्त 1947 ई. में आजादी प्राप्त हुई।

वर्तमान समय में हम अपना 75 वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। आज भारत की पहचान दुनिया भर में एक सशक्त राष्ट्र के रूप में हो रही है। जब भारत आजाद हुआ तो हमारे पूर्वजों ने कई सपने देखे थे जो कि कई हद तक आज पूर्ण भी हो रहे हैं किंतु पूर्ण रूप से अभी भी हम देशवासियों को उन सपनों को पूरा करने के लिए प्रयास करने होंगे। आज भारत विकासशील देशों में गिना जाता है जो कि विकसित देशों की तरफ अग्रसर हो रहा है।

यदि आजादी के 75 साल बाद हम भारत का स्वरूप पूर्णतः बदलना चाहते हैं तो इसके लिए आत्मनिर्भर भारत का होना अत्यंत आवश्यक है। एक व्यक्ति का सबसे बड़ा गुण आत्मनिर्भरता होता है। आत्मनिर्भर का अर्थ है कि एक व्यक्ति विशेष को किसी और के सहारे न रहकर स्वयं के सहारे रहना चाहिए। 1947 में जब देश आजाद हुआ तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर बल दिया व आत्मनिर्भर भारत बनाने का सपना देखा। परंतु बड़ी विडंबना है कि आजादी के 75 साल बाद भी भारत सपने से अछूता रहा है।

वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान चलाया गया जिसका उद्देश्य भारत को अपने पैरों पर खड़ा कर विकसित देश बनाना है। आत्मनिर्भरता प्राप्त करने हेतु हर व्यक्ति का सत्यनिष्ठा होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि कहा भी जाता है कि सत्यनिष्ठा व मेहनत से किया गया हर कार्य सफल होता है और उसका फल भी अवश्य मिलता है। सत्यनिष्ठा का अर्थ है सत्य की राह पर चलना चाहे रास्ता कितना भी कठिन हो। सत्य निष्ठा के साथ आत्मनिर्भरता का कदम बढ़ाना देश को अलग ऊंचाई पर पहुंचा सकता है। हमेशा सत्य के आधार पर चलने वाले व्यक्ति को कभी पराजय का मुँह नहीं देखना पड़ता। अगर हम सत्य निष्ठा का सहारा लेकर आत्मनिर्भरता की ओर अपने कदम बढ़ाएं तो देश को रोजगार उपलब्ध होगा, देश में भ्रष्टाचार का विनाश होगा एवं हर क्षेत्र में पारदर्शिता आएगी।

सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भर बनना एक व्यक्ति ही नहीं अपितु संपूर्ण राष्ट्र के लिए कारगर साबित होगा और फिर वह दिन दूर नहीं जब संपूर्ण राष्ट्र विकसित देश के रूप में गिना जाएगा और भ्रष्टाचार का नामों निशान देश से उखाड़ फेंक दिया जाएगा।

नराकास के तत्वावधान में आयोजित गीत अंताक्षरी प्रतियोगिता की कुछ झलकियाँ



गणतंत्र दिवस, 2023 की कुछ झलकियाँ



गणतंत्र दिवस, 2023 के अवसर कार्यालय में कैंटीन का शुभारंभ



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2023 अंतर्गत कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा – 2022 की कुछ झलकियाँ



ऑडिट दिवस – 2022 की कुछ झलकियाँ



चैतन्य अस्पताल, विजयावाडा द्वारा आयोजित कार्डियक कैंप की झलकियाँ



पेंशन अदालत का आयोजन



आई.ए.एंड ए.डी. साउथ जोन कैरम टूर्नामेंट-2023 की कुछ झलकियाँ



स्वतंत्रता दिवस, 2023 की कुछ झलकियाँ



ए० जी० ऑफिस

देवनाथ मिश्रा,
वरि. लेखापरीक्षक



यह एक कार्यालय नहीं है जनाब, यह तो पूरा दर्शन है,
ऐसा लोगों का अभिमत है, कि यह कार्यालय नहीं लघु भारत है।
पंजाब का भांगड़ा पलभर में ही तोड़ सकता है, तुम्हारी खामोशियां ,
यहाँ मिलन है पूरब और पश्चिम का उत्तर से दक्षिण तक का.
अरुणाचल प्रदेश की दिवांग घाटी की खुशबू उठा लाता है कोई आप तक,
तो गुजरात के द्वारकापुरी की घंटियों की आवाज सुनाता है कोई,
इसी कार्यालय में बैठे-बैठे जम्मू कश्मीर के डल झील में सैर करा देता है कोई,
तो कोई देवभूमि से चुरा लाता है गंगा के कल-कल नाद को ।
किसी बगल वाले के लंच बाक्स में मिल जाता है,
रोटी पराठे और पोंगल,
तो किसी के लंच बाक्स में दिख जाता है, इडली-डोसा और सांभर ।
यहीं पर मिल जाते हैं बंगाल के दादा, और दक्षिण वाले अन्ना,
गुजरात के मोटा भाई तो उत्तर वाले भइया ।।

यहीं पर मिल जाते हैं अच्छे दार्शनिक और दोस्त के हाथ,
मस्त रहो और मजे करो संदेश के साथ।

उनकी बातें भी कुछ ऐसी होती हैं, मानो हम कुरुक्षेत्र के मैदान में खड़े हों,

बेबस और लाचार पड़े हों,

और वो भगवान कृष्ण की तरह हमें गीता का ज्ञान दे रहे हों।

थालियों में बँटते प्रसाद, आपको याद दिलाते हैं,

तिरुपति, शिर्डी, काशी और अन्य स्थानों की बात सुनाते हैं,

जो आपकी आध्यात्मिक चेतना और कर्तव्यों का एहसास कराते हैं ।

कार्यालयों में खुलते मिठाइयों के डिब्बे पूरे जीवन दर्शन को बयां करते हैं,

किसी के परिणय सूत्र में बँधने या किसी के घर गूँजी किलकारियों के रहस्य बताते हैं।।

उत्तर पूर्व भारत के अपने सहकर्मी से हम सीख सकते हैं,

प्रकृति प्रेम की परिभाषा और दहेज मुक्त भारत की अभिलाषा,

एशिया का सबसे साफ सुथरा गाँव,

उत्तर-पूर्व भारत में ही बसता है,

सुन सकते हो अपने इस कार्यालय में,

अपने किसी उत्तर पूर्व सहकर्मी से उसका

अनुभव,

यह कार्य तुम भी अपने गाँव में कर सकते हो संभव ।।

अगर दक्षिण की हरियाली और संस्कृति,

इसकी विनम्रता और सिम्पलीसिटी ,

उत्तर तक फैला दोगे, तो उत्तर भी हरा भरा हो जाएगा,

प्रदूषण और अपराध मुक्त कहलाएगा।

प्रदूषण की किताब में छपे कानपुर, गाजियाबाद और दिल्ली, के पन्ने,

अपने आप निकल जाएंगे, और अपराध की घटनाओं पर अंकुश लग जाएंगे।

और यदि उत्तर का अल्हड़पन और मस्ती दक्षिण तक पहुँचा दोगे,

तो दक्षिण में भी रौनक आ जाएगी, हर घर में चहल पहल छा जाएगी।

यह कार्यालय भी किसी विश्वविद्यालय से कम नहीं है,

इतनी भाषा और बोली तो किसी विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ाई जाती होगी,

जितनी भाषाओं के बीच आप रहते हैं,

हिंदी, अंग्रेजी गुजराती, मराठी तमिल व तेलुगू आप सीख सकते हैं,

दिखावे में नहीं वास्तव में आप भारत जोड़ सकते हैं।।

यहाँ कथक और कथकली की ताल है,

तो भांगड़ा और घूमर की मस्ती है,

कश्मीर का रऊफ और हिमाचल की नति पास है,

तो भरत नाट्यम, कथकली और मोहिनीअट्टम का भी इतिहास है,

घर से दूर बैठे परिवार की महत्ता और अपनी मिट्टी की खुशबू का एहसास कराता है यह कार्यालय, व्यक्तिगत जीवन से सार्वजनिक जीवन की सैर कराता है यह कार्यालय,

हिंदी विरोध के दौर में, गैर हिंदी भाषियों को भी जोड़ सकता है यह कार्यालय।।

इस कार्यालय का युवा, जो अभी-अभी आया है,
पद को सही से संभाल भी नहीं पाया है,
संभाल लेता है बड़ी बड़ी जिम्मेदारियों को,
ये अलग बात है कि उसके अभी भी कुछ सपने हैं,
बस सबके ढंग अपने-अपने हैं।

यहाँ किसी के हाथ में इतिहास की किताब है,

तो किसी का स्वयं अपना इतिहास है।

इसी कार्यालय में वाट्सएप पर सर्कुलेट होते मैसेज,

1-2 या 3 यूनिट ब्लड की तलाश करते हैं,

इन रगों में बहते खून, आपकी धन सम्पत्ति और आपकी पद प्रतिष्ठा से,
कहीं बहुत ऊपर है, इस बात का एहसास कराते हैं।।

यहाँ पर मिलना-बिछड़ना, साथ-साथ चलता है,

एक ही दिन एक युवा इस कार्यालय से जुड़ता है,

तो दूसरी तरफ कोई वरिष्ठ इस कार्यालय से बिछड़ता है।

एक अपने नये जीवन की शुरुआत कर रहा होता है

तो दूसरा इस कार्यालय के आंगन से ,

अपनी 60 के बाद की पारी के लिए आबाद हो रहा होता है।।

जहाँ पर हर सप्ताह,

कोई ना कोई अपनी आंखों में उम्मीद लिए कार्यालय की नोटिस बोर्ड पर,

डेप्युटेशन और म्यूचुअल ट्रांसफर ढूँढता है।
 इसलिए नहीं कि उसे यह शहर काटता है,
 इसलिए भी नहीं कि वह अपनी जिम्मेदारियों से भागता है
 बल्कि इसलिए कि हो सकता है कि,
 उसे अपनी बहन के पीले करने हों हाथ,
 ऐसा इसलिए कि अभी-अभी आपरेशन के बेड से उठे हों उसके मां-बाप,
 ऐसा इसलिए कि वृद्ध हो चुके माँ-बाप के हाथ किसी कंधे की तलाश में हैं,
 उनके पैर लड़खड़ा रहे हैं, कोई सहारा देगा, इसी विश्वास में हैं।
 इस कार्यालय में युवाओं का जोश है,
 तो बड़ों का अनुभव भी है,
 इसीलिए तो बड़े कठिन और दुर्लभ कार्य भी यहाँ संभव हैं।
 इस कार्यालय में माँ और बहनों का रोल भी कुछ कम नहीं है,
 बेटियाँ जो पली बड़ी पापा के दुलार में,
 बामुश्किल लांघ पाती थी घर की चारदीवारी को,
 एक ही झटके में नाप दिया है उन्होंने भी मीलों दूरी को,
 कभी घर को समेटने वाली बेटियों ने,
 आज पूरे शहर को ही समेट लिया है।
 घर-बार की जिम्मेदारियों को संभालने वाली माँओं ने,
 पूरा कार्यालय ही सम्हाल लिया है।
 माना कि माँ गंगा नहीं मिल सकती हैं, विजयवाडा की माँ, कृष्णा में,
 लेकिन आप गंगा-यमुना की पवित्रता के संवाहक हो सकते हैं,
 उत्तर की गंगा यमुना से लेकर, दक्षिण की कृष्णा-कावेरी,
 पूर्व की ब्रह्मपुत्र से लेकर पश्चिम की साबरमती के संगम हो सकते हैं,
 यह कार्यालय है जनाब,
 जहाँ आप अपने को और अपनों को भी ढूँढते हैं,
 और आप अपने में एक कार्यालय ही नहीं, बल्कि पूरा भारत ही समेटते हैं।
 जय हिंद जय भारत।

बचपन के दिन

के . आशीष
सहायक लेखा अधिकारी



सोच रहा था क्या लिखूँ?
फिर सोचा बचपन का कोई किस्सा ही लिख दूँ।
जब याद करता हूँ वो दिन,
नाना-नानी के साथ बिताये वो लम्हे वो अनमोल पल,
काश! कोई लौटा सके वो अनमोल दिन।

गर्मी की छुट्टियों में, आम के पेड़ से फल चुराना,
आज के बच्चों को फोन में खेलता देख, सोचता हूँ क्या था वो जमाना।
स्कूल में बिना होमवर्क करे बैखौफ जाना,
लंच से पहले ही टिफन खा के,
दोस्तों के साथ जा के कड़ी धूप में खेलना,
जब याद करता हूँ वो दिन,
काश कोई लौटा सके वो अनमोल दिन।

आज भी जब याद करता हूँ, तो याद नहीं कर पाता हूँ कि,
वो आखिरी बार दोस्तों के साथ क्रिकेट कब खेला था?
वो आखिरी बार मम्मी की डाँट कब सुनी थी?
वो आखिरी बार मेला देखने कब गए थे?
वो आखिरी बार कजिन के साथ मस्ती कब की थी?
बचपन से सोचता आ रहा था कि कब हम बड़े हों
और अपने पैरों पे खड़े हो सकेंगे,
अब, जब वो मुकाम हासिल कर लिया है,
तो याद आते हैं वो बचपन के दिन ।।

कसक

अपूर्वा सिंह
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



उम्मीदों सी उजली-उजली, मायूसी सी धुंधली ज़िंदगी
अभी लकीरों में कैद थी, अभी हाथ से फिसली ज़िंदगी ।
आ बैठ मेरे पहलू में आकर, तुझे हाल दिलों का सुनाऊँ गाकर ।
कुछ तुम कह दो भूली बिसरी, कुछ मैं सुनाऊँ खुद पे गुज़री ।
“याद” नगर के मीठे किस्से, क्या याद तुम्हें भी आते हैं
दिल और पलकें गीली करके, लौट कहाँ को जाते हैं ।
चोट तुम्हें जब लगती है, क्या आँखों से खारे बहते हैं ।
खोकर ही तो पाना है, फिर यही सारे कहते हैं ।
ज़िंदगी
मुझे सदा ही चलते रहना, “याद” नगर को छोड़ कर ।
मीठे किस्सों और यादों से, सारे बंधन तोड़कर ।
चलता दरिया, चलती नदियां, और चलते हैं चाँद सितारे ।
चलते-चलते ही आ जातीं, पतझड़ों के बाद बहारें ।
हाँ, चोट मुझे भी लगती है, और दर्द में मैं भी घुटती हूँ ।
मैं रोती और सिसकती हूँ, और गिरकर फिर से उठती हूँ ।
पर खुद ही अपना मरहम हूँ, और खुद ही अपनी राहत हूँ ।
कैदी बनूँ क्यूँ ख्वाहिशों की, मैं खुद ही अपनी चाहत हूँ ।
ना रूप ,कद, आकार कोई, ना ही कोई धनक सा रंग ।
समय से मेरा सृजन हुआ, समय का हूँ एक अभिन्न अंग ।
जीत भी हूँ और हार भी हूँ, सुख और दुख की कहानी हूँ मैं ।
हल करने की छोड़ दो कोशिश, सवाल नहीं ज़िंदगानी हूँ मैं

यूँ ऐसे ही

शशांक सिंह
डी.ई.ओ.



यूँ ऐसे बैठे बैठे
बेढ़ंगे से नाखूनों को कुतरना
और सामने की उस पुरानी दीवार की
पपड़ी पे कुछ पुराने किस्से बुनना,
कि जैसे,
कुछ महसूस हो रहा हो,
अंदर ही अंदर
आँखों के सामने से,
वक्त को फिसलते देखना...
कि जैसे रेत फिसलती हो,
बंद मुट्ठी के बंद कोनों से
और एक बेचैनी भी दिल में,
कि जैसे अभी-अभी..
ये रेत से भरी मुट्ठी, कहीं खाली न हो जाए,
कि अभी कोई आहट..
इस दीवार की पपड़ी को गिरा न दे
रोक लो इन बहते हुए अरमानों को,
ढूँढ़ लाओ संदूकों में बंद पुरानी किताबों को
थोड़ा ठहर के,
फिर से पढ़ लो..
कि जो कभी लिखा ही नहीं गया,
कि कहीं ऐसा न हो कि..
ये वक्त ही निकल जाए
और सब खाक हो जाए।
ऐसे ही हर दिन सोचता हूँ,
और आँखों के सामने..
वक्त को फिसलते देखता हूँ।।

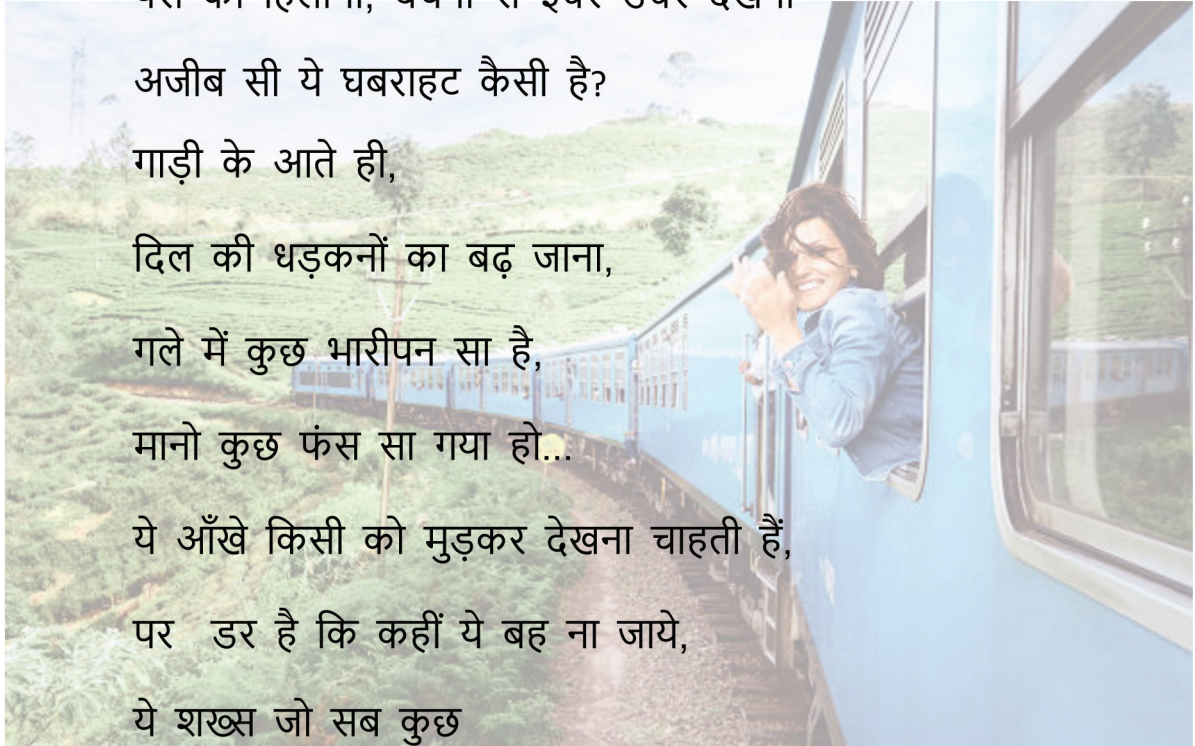
सफर

चंद्रपाल वर्मा
डी.ई.ओ.



हर शख्स कुछ कहानियाँ लिए
बस चलता जा रहा है.....

इंतजार रेलगाड़ी का करते करते,
पैरों का हिलाना, बेचैनी से इधर उधर देखना
अजीब सी ये घबराहट कैसी है?
गाड़ी के आते ही,
दिल की धड़कनों का बढ़ जाना,
गले में कुछ भारीपन सा है,
मानो कुछ फंस सा गया हो...
ये आँखे किसी को मुड़कर देखना चाहती हैं,
पर डर है कि कहीं ये बह ना जाये,
ये शख्स जो सब कुछ



जीतने की काबिलियत रखता हो,
अब वो डर क्यों रहा है?
हर शख्स कुछ कहानियाँ लिए
बस चलता जा रहा है.....

गाड़ी के चलते ही ये अलगाव
जो अब सहा नहीं जा रहा है..

मन कर रहा है लौट जाया जाये,
 वहीं जहाँ शायद सुकून मिलता है
 पर ये भी अब बस में नहीं है,
 पहियों के चलने की गड़गड़ाहट से
 मन में चिंतन का बढ़ने लगना,
 जैसे सोचने की क्षमता दो गुनी हो गयी हो,
 अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों का स्मरण,
 सोचने को मजबूर किये जा रहा है..
 हर शख्स कुछ कहानियाँ लिए
 बस चलता जा रहा है.....
 सामने बैठे शख्स को महसूस किया जा सकता है,
 जो शायद कई वर्षों से बस यात्रा पर ही है,
 जो बहुत सारी कहानियाँ लिए चलता जा रहा है,
 जैसे वो कह रहा हो कि थक चुका हूँ
 अब विश्राम ही एकमात्र समाधान है।
 जो सोच रहा हो मानो ये सब थम क्यों नहीं जाता?
 ये सफर अब रुक क्यों नहीं जाता?
 जैसे सोच रहा हो कोई तो आकर,
 अब उसे इस सफर से उतार ले
 वो खुद से कह सके,
 ये क्षमता भी अब वो खोता जा रहा है..
 हर शख्स कुछ कहानियाँ लिए
 बस चलता जा रहा है.....

उड़ान

चंद्रपाल वर्मा
डी.ई.ओ.



शब्द भी जब निशब्द होने लगें, सुनकर यूँ दास्तान जब
यकीन करना मुश्किल जाए जब, सारे दरवाजे बंद हो जाएं जब
मुरादें भी मुँह फेर लें जब, रोशनी धीमी हो जाये जब
सेवेरे का इंतजार करना....।

मुस्कराहटें गम को छुपायें जब, विश्वास डगमगाए जब
रास्ते बदल जाएं जब, वक्त कहीं थम जाए जब
उम्मीदें शून्य हो जायें जब
खुद पर विश्वास रखना...।

असफलताएं घिर आएँ जब, रंग फीके पड़ जाएँ जब
अपनापन घट जाए जब, शोर अधिकाधिक बढ़ जाए जब
“हाँ सब ठीक है”
कहना पड़ जाए जब, जमीं जकड़ने लग जाए जब
खुले आसमान में
हौसलों से उड़ान भरना.....।

कुछ ख्वाब

शशांक सिंह
डी.ई.ओ.



कुछ ख्वाब सूखे पत्तों से झड़ गए,
बिखरे दूर तक, हवाओं के साथ रह गए।
कुछ सपने जो अधखुली आँखों में अब भी हैं,
जो पहुँचे नहीं मंजिल तक, रास्तों पे अब भी हैं।
गर्म रेत में हाथों से जो बनाये घर थे,
लहरों में बह गए, पर वजूद अब भी है।
जो निकले थे सुबह, पर रात तक लौटे नहीं,
पैरों में छाले और यादों के उजाले रह गए।
टूट गए हैं, पर दिल कहता है, यूँ मायूस न हो,
आँखों से निकलकर फिज़ाओं में घुल गए।
कुछ ख्वाब, सूखे पत्तों से झड़ गए।
तेज भागा, पर अपने ही असूलों में फंसता गया,
जब मैं लड़खड़ाया, तो कोई मुझे संभालने न आया।
गलती करता गया, सजा खुद ही पाता गया।
ख्वाब रुठे पर उनको मैं मनाया नहीं,
अशक निकले पर उनकों मैं गिराया नहीं।
तुम कहते हो कि कितना खुदगर्ज हूँ मैं,
दिल रोता गया, पर तुझकों पुकारा नहीं।
जख्म भर गए, पर कुछ निशान रह गए,
कुछ ख्वाब सूखे पत्तों से झड़ गए।।

अनोखी दावत

नीरज मित्तल
लेखा परीक्षक



एक दिन जाना पड़ गया, दोस्त की बारात में,

बीवी बच्चे भी थे साथ में।

बेटी ने नई क्लिप लगाई थी,

बेटे को नई जीन्स पहनाई थी।

शाम के 8 बज चुके थे, बीवी चिल्ला रही थी,

लेट हो गए हम, 7 बजे का समय बता रही थी।।

जब पंडाल में पहुंचे, अलग नजारा था,

गाना बज रहा था पर फिर भी लोगों में सन्नाटा था।

लोगों के चेहरे रुखे थे,

क्या करें सब सुबह से भूखे थे।

घड़ी 8.30 बजा रही थी,

लोगों की भूख, लोगों में आक्रोश जगा रही थी।

जैसे ही खाने का बुलावा आया, पंडाल में भगदड़ मच गई।

कोई प्लेट को खींचता, कोई चम्मच पर जोर लगा रहा था,

पास खड़ा नाटा व्यक्ति, सलाद के खीरे और गाजर ही निपटा रहा था।

एक के उपर एक लदे जा रहे थे,

जितना थाली में नहीं लिया, उससे ज्यादा फैला रहे थे।
 एक तो कोट-पैट उतार, प्लेट लिए तैयारी कर रहा था,
 खाना लेने नहीं मानो जंग लड़ने जा रहा था।
 एक महिला की साड़ी पर किसी ने सब्जी गिराई थी,
 महिला के उपर तो जैसे कोई आफत आई थी।
 पीने के पानी से ही उस दाग को बार-2 धो रही थी,
 पड़ोसन की मांग कर लाई थी शायद इसलिए रो रही थी।
 एक महाशय अपने मोटे पेट से लाचार थे,
 भीड़ में घुस न सके तो उनकी प्लेट में बस आचार थे।
 एक आदमी की हाईट मुझे खूब भा रही थी,
 सारी चीजें अच्छे से ले पा रहा था और
 उसकी बीवी मजे से खा रही थी।
 पंडाल में ये भगदड़ का माहौल आधे घंटे चला,
 मेरा परिवार डर से एक कदम आगे न बढ़ा।
 जब खाना खत्म हुआ तो सभी के कपड़े
 सब्जी से सने थे,
 हम अपनी जगह पर खाली प्लेट लिए खड़े थे।
 रात ज्यादा थी, इसलिए बाहर होटल खोजना पड़ रहा था
 पेट भूखा और मन निराश था,
 क्योंकि पहली बार शादी से भूखा लौटना पड़ रहा था।

मेरे मन में उमड़ता प्यार

शुभम दीक्षित
वरि. लेखा परीक्षक



तेरे बिन हर क्षण वर्ष लगे, है दिन भी तू और रात भी तू
दिन की उजियारी रश्मी तू, संध्या की महकती शाम भी तू
तेरी आँखियाँ है नीलकमल, मैं याचक तू सरकार
सागर में जल जितना, उतना मेरे मन में उमड़ता प्यार।

है चाँद तू ही, तारा तू ही, सूरज भी संसार भी तू
चूड़ी की खन-खन छन-छन तू, उल्फत की नई मझदार भी तू
अपनी आँखों के पनघट पर, मुझको भी बुला एक बार
सागर में जल जितना.....

संगीत तू ही, मनमीत तू ही, सरगम भी मेरी और साज भी तू
ख्वाहिश तुझसे और प्यास तू ही, आवाज भी तू अंदाज भी तू
मेरे सपनों का इंद्रधनुष तुमसे करता श्रृंगार,
सागर में जल जितना.....

तेरी चितवन चंचल सी पवन, चंचल सा बदन जज्बात भी तू
मेरी कविता तू ही है प्रिये, वर्षा का राग मल्हार भी तू
तेरी गोदी में सिर रखकर सुख मिलता मुझको अपार
सागर में जल जितना.....



हिन्दी दिवस

हिंदी

लिखें. पढ़ें. बोलें. गर्व करें.



हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

नजर का टीका

प्रियंका
डी.ई.ओ. ग्रेड 'बी'



कितनी भोली होती हैं ये अला बला टालती औरतें
बच्चों के लिए कढ़ाई में घी पर तैरता हलवा बनाती,
फिर पल्लू से ढककर रसोई से कमरे तक जाती
सरसों के तेल की बाती जला,
जूती से मार-मारकर नजर झाड़ती।
नूण-राई कर अबोली चलती है घर के बाहर
आँचल से ढककर पिलाती हैं दूध,
बार-बार अपनी ही नजर से डरती
डालती है थुथकारा।
दूध भी न जमे तो काट लगाती है चाकू की
बचाए रखती हैं नींबू, मिर्च, राई, सुअर का दाँत,
बांधकर घर के दूध-पूत
रोटी पर रोटी आ जाए तो रखती हैं सालभर,
अनाज की टंकी में बरकत मानकर।
काले डोरे पर रुकता है इनका विश्वास
कि नजर बुरी लगेगी ही नहीं
लाख टोटके करती हैं,
फिर भी नहीं मिल पाता इन्हें कोई ऐसा टोटका
जो दिला सके इन्हें दिनभर में पलभर का आराम।

सीख ले

अखिल खरब
वरि. लेखापरीक्षक



(किसी शायर ने क्या खूब लिखा है -“ किसी को ज़मीन नहीं मिलती, तो किसी को आसमां नहीं मिलता,किसी को भी यहाँ मुक्कमल जहां नहीं मिलता”)

तू अपने दिल को मनाना सीख ले,
न मिला वो भूल जाना सीख ले।
बाजुओं पे अपने तू कर ले यकीन,
अब तू खुद को आजमाना सीख ले।

है नाव तेरी गम की नदिया में मगर,
संघर्ष का चप्पू चलाना सीख ले।
नहीं जँचती तेरे चेहरे पे खामोशीयां,
एक काम कर तू, मुस्कुराना सीख ले।
दर्द अपने सीने में कर ले दफन,
आँखों में आँसू छुपाना सीख ले।
अपने जख्म को भूलकर
औरों को मरहम लगाना सीख ले।

देश से प्यार करो भाई

आर. रामाकृष्णा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



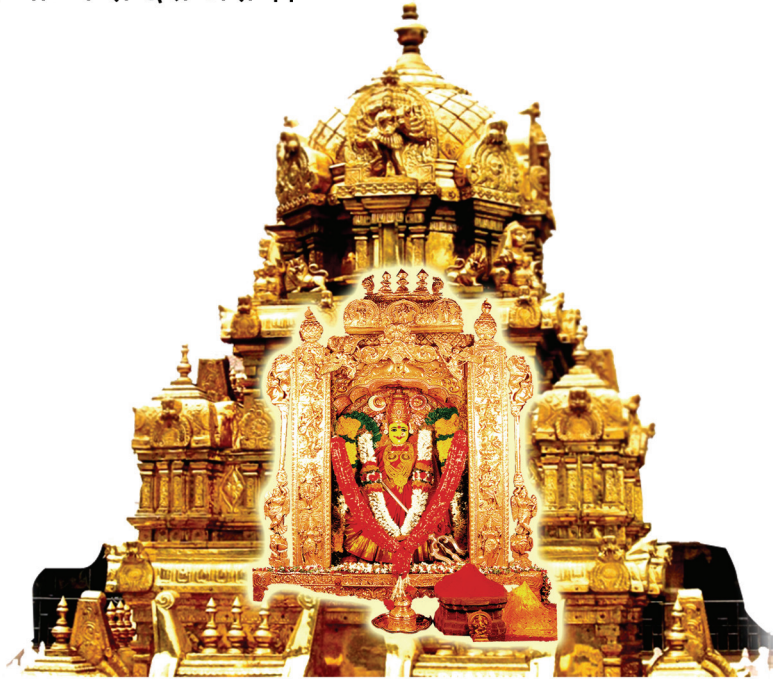
देश से प्यार करो भाई ,
नेकी के संग आगे बढो ।
अनर्गल बातें बंद करो,
लक्ष्य की ओर ध्यान धरो ॥

देश विशाल बृक्ष समान है,
फैलाता प्यार की खुशबू ।
खून पसीने की कमाई से,
धन-धान्य अर्जित करो ॥

खेती-बाड़ी बढ़ाने के लिए,
रात दिन मेहनत करो ।
अच्छा भोजन सेहत देता,
सेहतमंद ही वीर बने ॥

अपने स्वार्थ को कम करो,
परहित का भी ध्यान धरो ।
देश मिट्टी का टुकड़ा नहीं,
देश बनता इन्सानो से ही ॥

निकम्मे अगर हम रहे तो,
देश को कौन संभालेगा ?
सारी कलाओं में निपुण बनो,
धन-धान्य से देश भरो ॥



कनक दुर्गा मंदिर आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में देवी दुर्गा को समर्पित है, जो
कृष्णा नदी के तट पर इंद्रकीलाद्री पहाड़ी की चोटी पर स्थित है ।

मिलन और जुदाई

श्याम किशोर सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



मिलन और जुदाई,
इस दुनिया की दस्तूर,
कुछ बिछड़े, फिर मिलने को,
कुछ बिछड़े, कभी वापस न आने को।

दरअसल बिछड़ना ही तो मिलना है,
वो हमसे बिछड़े और अपनों में जा मिले,
हमें गम है वो हमसे जुदा हो गए,
पर वो खुश है कि उन्हें नए लोग मिल गए।

तुम इस दर को छोड़, अपनी मंज़िल चले जाना,
पर यदा कदा हमारे यादों में भी आना,
तुम तो आपनो को पा गए,
पर हमें यहाँ क्यों रोता छोड़ गए?

बिछड़ना ही तो दरअसल मिलना है,
अगर तुम कहीं से जुदा न होते,
तो हमसे कैसे मिल पाते?
अगर फल टहनी से न गिरते,
तो नए पौधे कैसे उग पाते ?

ये प्रभु की है प्रभुताई,
बनाई मिलन के बाद जुदाई
बस, हम इतना ही करते फरियाद
तुम हरदम रहो आबाद,
तुम हरदम रहो आबाद।

हैप्पी बर्थडे

जितेंद्र नाथ शर्मा
वरि. उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा)



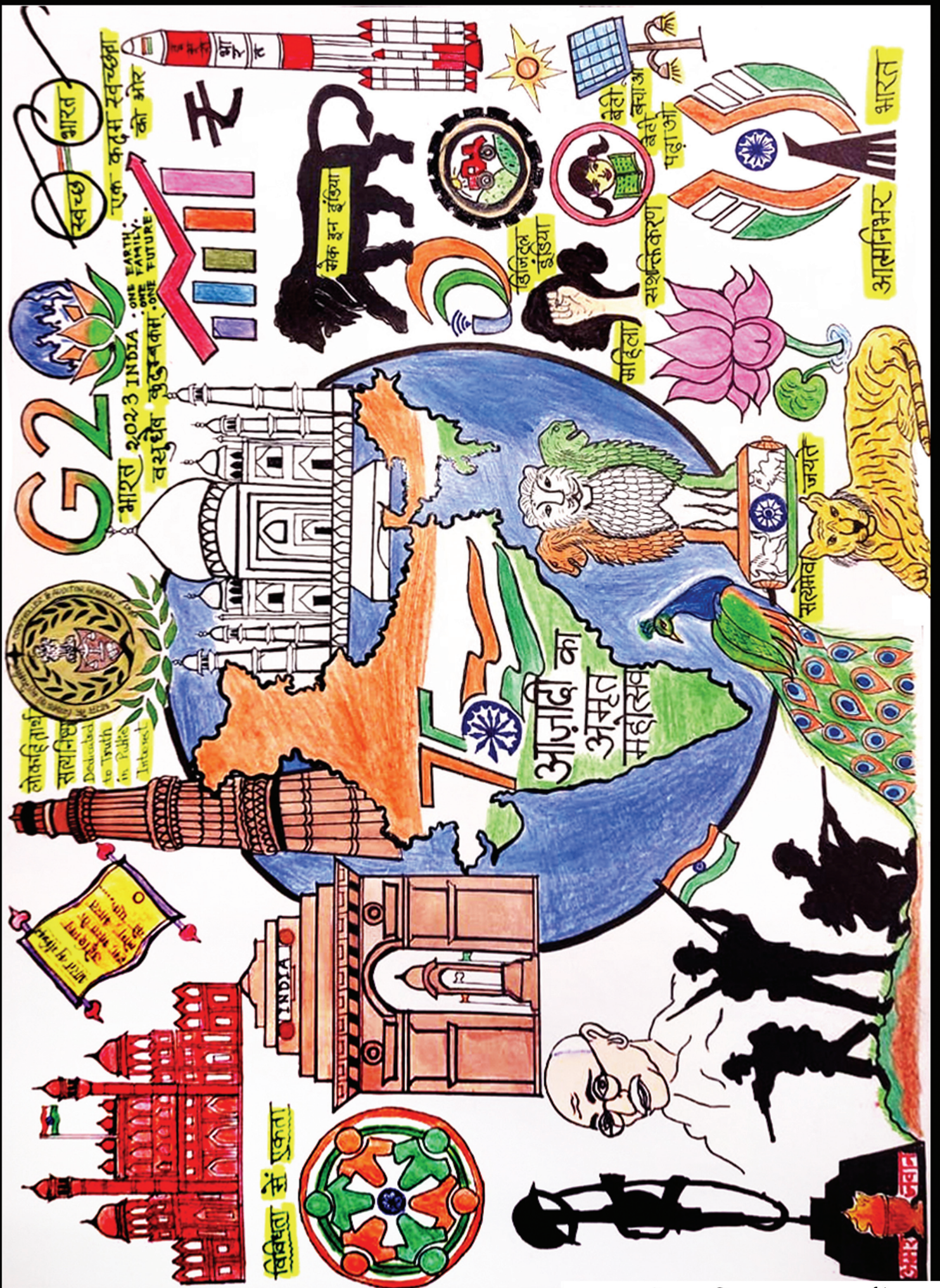
काम काज के चक्कर में,
भूल गया दिन खास.....
इतने में फोन आ गया,
जूते पड़े पचास.....।।
जूते पड़े पचास,
समझाऊँ मैं कैसे उनको,
रोज नाम ले रहा था
पर भूल गया इस दिन को।।
क्षमा याचना हमने डाली,
ये बताया कारण,
तुम ही बता देते इसका
कैसे हो निवारण?
कैसे हो निवारण,
रोज मनायें जन्मदिन तुम्हारा,
"हैप्पी बर्थडे" बोले,
ये दास तुम्हारा।।

हिसाब

जितेंद्र नाथ शर्मा
वरि. उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा)



करने बैठा था हिसाब अपना,
इतने में माँ की याद आ गयी।
माँ ने पूछा! किस-किस का हिसाब करेगा,
करके तू देख ले, होगी तेरी जग हँसाई।।
मैंने पूछा – माँ, आप अब भी तस्वीर से बोलती हो?
क्या आप हर वक्त मेरे साथ डोलती हो?
माँ बोली! बेटा जब से तू जन्मा है,
तू मेरे शरीर का ही टुकड़ा है।
तू जिधर भी चलेगा मैं तेरे संग चलूँगी,
हर कठिन परिस्थिति में तेरा हमसाया बनूँगी।
और बोली बेटा!
तू केवल मेरे बताये रास्ते पर ही चलना,
जो सत्य-निष्ठा और आदर्श से भरा होगा, और
जो तेरे जीवन को सरल, सफल और सुखमय बनायेगा।
इतना कहकर माँ आँखों से ओझल हो गयी,
उनकी कही हुई बातें दिल में बस गयी।
फिसल न जाऊँ कहीं, इससे मैं डरता हूँ --
फिसल न जाऊँ कहीं, इससे मैं डरता हूँ----
इसलिए केवल अपने कर्मों का हिसाब रखता हूँ,
इसलिए केवल अपने कर्मों का हिसाब रखता हूँ।





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

**प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) आंध्र प्रदेश और प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) आंध्र प्रदेश का कार्यालय विजयावाडा-520002**